शिव जयन्ति - एक सार्वभौमिक उत्सव

इसे विडम्बना ही कहेंगे कि जिस सर्वशक्तिमान परमात्मा को लोग अपने विचारों और भावनाओं में याद करते हैं उसे यथार्थ रूप से जानते ही नहीं हैं। सृष्टि के नियन्ता परमात्मा की अदभुत रचना को देखकर उसका गुणगान तो बहुत लोग करते आये हैं, किन्तु उस परम चैतन्य परमात्मा का यथार्थ अलौकिक अनुभव नहीं है। आश्चर्य तो यह है कि परमात्मा को नहीं जानते हुए भी उसे याद करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि आत्माओं के स्थूल नेत्रों के समक्ष कोई मूर्त रूप न होते हुए भी कहीं ना कहीं उनके अन्तर्मन में उस विचित्र निराकार परमात्मा की अस्पष्ट छवि अवश्य होती है जिसे उनकी भ्रमित बुद्धि समझ नहीं पाती।

अतीत में अनेक ऋषि-मनीषियों ने घोर तपस्या करके अन्ततः नेति नेति कह दिया। परमात्मा का अन्त पाना कठिन है। विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति करने वाले वैज्ञानिकों ने भी यही कह दिया कि जहाँ विज्ञान समाप्त होता है वहाँ से अध्यात्म शुरु होता है। विज्ञान केवल यही कहता है कि इस ब्रह्माण्ड में आकाश गंगाओं के पार कोई ऐसी ऊर्जा का स्रोत है जो इन सभी ऊर्जाओं को नियंत्रित करता है। वह स्रोत क्या है? इसके उत्तर में विज्ञान भी मौन है। विज्ञान केवल इतना ही कहता है कि इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के बारे में जो भी अभी तक ज्ञात है वह इस विशाल महासागर की तुलना में केवल एक बूंद के बराबर है।

प्रकृति की ऊर्जा से प्रभावित मानव आध्यात्मिक शक्ति के असीम स्रोत परमात्मा को नहीं जान सकता। दरअसल एक सामान्य मनुष्य को परमात्म दिव्य शक्तियों का एहसास ही नहीं होता और ना ही मानव बुद्धि सूक्ष्म शक्तियों की रहस्यमयी गतिविधियों के बारे में सोच सकने में समर्थ है। इसलिए यह स्पष्ट समझ लेने की बात है कि परमात्मा और उसकी सूक्ष्म, अति सूक्ष्म शक्तियों को साधारण बुद्धि से नहीं समझा जा सकता। परमात्मा के अस्तित्व को समझने और उनके साथ परम-मिलन का अनुभव करने के लिए केवल विद्वान होना ही पर्याप्त नहीं है।

परमात्मा का यथार्थ परिचय स्वयं परमात्मा ही देते हैं। परमात्मा का दिव्य अवतरण होता है। सृष्टि के महापरिवर्तन में परमात्मा की अहमं भूमिका है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखने से यह स्पष्ट होता है कि ऊर्जा का एक रूप से दूसरे रूप में परिवर्तन होना या सतोप्रधान से तमोप्रधान रूप में परिवर्तन होना - यह एक समय के चक्रीय क्रम में होता है। तमोप्रधान ऊर्जा को सतोप्रधान में परिवर्तन करने को सृष्टि का नवीनीकरण कहते हैं।

सृष्टि का नव निर्माण करने के इस क्रम में ऊर्जाओं के महास्रोत परमात्मा के साधारण मानवीय शरीर में दिव्य अवतरण की दिव्य घटना भी ऐसे ही समय पर घटती है जब सृष्टि की तात्विक ऊर्जाएं तमोप्रधान हो जाती हैं। तात्विक ऊर्जाओं का तमोप्रधान होना और चैतन्य अभौतिक आत्माओं का पतित होना साथ-साथ होता है। इसलिए ही यह कहा गया है कि यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति......... अर्थात जब धर्म की अति ग्लानि हो जाती है तब परमात्मा का अवतरण होता है। यह जब सृष्टि के समय चक्र का अन्तिम समय है। अब सभी प्रकार की तात्विक ऊर्जाएं सम्पूर्ण तमोप्रधान अवस्था को प्राप्त हो चुकी है। अब पुनः निराकार ज्योतिस्वरूप परमात्मा दिव्य अवतरित होकर अपना दिव्य रूप से कर्तव्य करा रहे है। अब यह धराधाम एवं सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड अपनी पूर्ववत् स्थिति में आ जायेगा। यह संसार परिवर्तन प्रक्रिया से पुनः सतयुग में परिवर्तित होगा।

विज्ञान के मतानुसार पदार्थ या तत्व का जितना सूक्ष्म रूप होता है उतना ही वह अधिक शक्तिशाली होता है। अध्यात्म विज्ञान की सूक्ष्मता इससे भी आगे का क्रम है। गुणों और शक्तियों के सागर होने के कारण परमात्मा को विशेषणात्मक रूप से सर्वशक्तिमान कहते है। वे इसलिए ही सर्वशक्तिमान है क्योंकि वे अत्यन्त सूक्ष्मातिसूक्ष्म हैं। विज्ञान के अनुसार यह भी तर्कसंगत है कि किसी भी भौतिक पदार्थ या तत्व का वस्तुतः एक रूप (आकार) होता है। ठीक इसी प्रकार से अभौतिक असीम चैतन्य शक्ति परमात्मा का भी एक अपना दिव्य आकार (रूप) होता है। जब

जड़ का आकार होता है तो उसका नाम भी होता है। बिना नाम के कोई भी वस्तु नहीं होती। ठीक इसी प्रकार से सर्वशक्तिमान निराकार ज्योतिस्वरूप परमात्मा का आकार और नाम दोनो ही हैं। उनका गुण और कर्त्तव्यवाचक नाम 'शिव' है। परमात्मा का अभौतिक रूप सूक्ष्मातिसूक्ष्म दिव्य 'बिन्दु' और स्वरूप 'ज्योति' है। भौतिक पदार्थ की तरह अभौतिक दिव्य शक्ति परमात्मा की उनकी शक्तियों और पवित्रता के कारण जड़-चैतन्य को दीप्यमान करने की आभा प्राप्त होती है।

परमात्मा को परम-चैतन्य ऊर्जा और सर्व प्रकार की ऊर्जाओं का स्रोत कहना ज्यादा यथोचित है। इसलिए ही परमात्मा को सत्-चित्त-आनन्द स्वरूप कहते हैं। वे सत् अर्थात शाश्वत और अपरिवर्तनशील हैं। वे परम चैतन्य अर्थात सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त के ज्ञान को जानने वाले सर्वज्ञ हैं। वे सदा आनन्द स्वरूप अर्थात अपनी परम चैतन्यता की पराकाष्ठा में सदा अवस्थित रहने वाले हैं। वे सदा एक जैसे हैं। वे अजन्मे और प्रकृति की सतो, रजो तमो अवस्थाओं से सदा परे रहने वाले हैं। परमात्मा अनादि-अविनाशी-मूल गुणों के सागर हैं। वास्तव में उन्हें व्यक्ति और वस्तु की तरह संज्ञा की सीमा में भी नहीं बांधा जा सकता। फिर भी एक व्यवहारिक विवेव–सम्मत भाषा में उन्हें परम-ऊर्जावान, परम-कल्याणकारी 'सदा शिव' की संज्ञा दी गई है।

आध्यात्मिक शक्तियों और गुणों के स्रोत निराकार परमात्मा सर्व प्रकार की ऊर्जाओं के उदगम एवं आकर्षण का केन्द्र हैं। वे अति सूक्ष्म ऊर्जा के सदा दाता हैं। भौतिक जगत के सूर्य के समान इस जगत से परे आध्यात्मिक जगत में अवस्थित परमज्योति परमात्मा एक चैतन्य सूर्य के समान है। उसकी शक्तियों का अनुभव करने के लिए वैसी ही पवित्र मनोस्थिति अर्थात बुद्धियोग की पात्रता का होना अनिवार्य शर्त है।

घटनाओं के घटित होने के बाद संस्मरण बनते हैं। भक्ति की रस्मों-रिवाजों की मान्यताओं में परमात्मा के दिव्य अवतरण के यादगार के संस्मरण विभिन्न रूपों में मिलते हैं। भक्ति के आदि काल से ही निराकार परमात्मा के मनुष्य तन में दिव्य अवतरण की प्रतीकात्मक यादगार भी बनी हुई हैं। इसे ही शिव जयन्ती भी कहते हैं। सहस्रों वर्षों से शिव जयन्ती के त्यौहार का मनाना यही दर्शाता है कि निराकार ज्योतिस्वरूप परमात्मा का दिव्य अवतरण सृष्टि चक्र के क्रम में अतीत में हुआ है, तभी तो उनके दिव्य जन्म (अवतरण) की यादगार शिवजयन्ती मनाते हैं। सृष्टि अपने एक चक्रीय क्रम में चलती रहती है। परमात्मा इसका नवीनीकरण करने एवं इसे निरन्तरता प्रदान करने के लिए अवतरित हो अपने मुख्य कर्तव्य कराते हैं। सृष्टि के परिवर्तन की प्रक्रिया में परमात्मा का अवतरण भी एक अनिवार्य रूप से निश्चित ही है।

आध्यात्मिक दृष्टि से हम सभी आत्माओं का अनादि अविनाशी सम्बन्ध परमात्मा से है। हमारा अपना पुरूषार्थ और परमात्म शक्तियों का सूक्ष्म सहयोग ही हम आत्माओं को हमारी अनादि सम्पूर्ण चैतन्यता की स्थिति में पुन: लौटाता हैं। इस दृष्टि से परमात्मा हम आत्माओं को नया जन्म देने वाले हमारे आत्मिक पिता परमपिता हैं। वे पिताओं एवम् धर्मपिताओं के भी परमपिता हैं। इस दृष्टि से इस शिव जयन्ती त्यौहार का सम्बन्ध केवल क्षेत्र,देश या धर्म सम्प्रदाय से नहीं है अपितु यह तो सम्पूर्ण विश्व की आत्माओं से सम्बन्ध रखता है, इसलिए यह सार्वभौमिक है।

परपिता परमात्मा शिव के नाम,रूप,कर्तव्य और दिव्य जन्म की यह संक्षिप्त विवेकसम्मत स्पष्टीकरण है। अत: शिव जयन्ती के उत्सव को बडी धूमधाम से मनाना चाहिए। यह समय परमात्मा के कर्तव्यों का चल रहा है। अब अनेक भावनाओं, अनेक मान्यताओं या कर्मकाण्डों में समय नष्ट ना कर परमात्मा पिता को यथार्थ रूप से पहचानें और उनसे अपना बुद्धियोग लगाकर स्वयं को धन्य धन्य अनुभव करें। इसी समय के लिए कहा गया है कि अभी नही तो कभी नहीं।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स www.bkvarta.com